

31/19¹⁰

पत्रावली के लिए । कृपि अधिप १।
 अनुपक्रित । आकाश लावा दी गई ।
 उपक्रित नही पत्रावली के इतक हम
 आदर पत्रों से प्रीति की जाती है
 पत्रावली के एक दुसरे लोग मध्य
 से एक से है

